एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जैव सुरक्षा

(*अमित कुमार[1], नवीन कुमार[1] एवं मोहनलाल जाट[2])
[1]लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविध्यालय, हिसार, हरियाणा
[2]चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविधालय, हिसार, हरियाणा
संवादी लेखक का ईमेल पता: amitdhartterwal@gmail.com

संक्रामक जीवो के एक पशु से दूसरे पशु अथवा एक पशुशाला से दूसरी पशुपालन शाला के बीच हस्तांतरण या फैलाव को रोकने के लिए उठाए गए कुछ कदमों को जैव सुरक्षा कहते हैं।

जैव सुरक्षा क्यों?

- संक्रामक जीवो के हस्तांतरण को रोकने के लिए
- पशुओं बर्तनों उपकरणों चारों इत्यादि के पर-संदूषण के रोकथाम के लिए

जैव सुरक्षा के तीन महत्वपूर्ण खंड

- संगरोध एवं अलगाव
- संचालन नियंत्रण और टीकाकरण
- स्वच्छता समेत मृत पशु/शव और खाद का निपटान तथा जल और पशुशाला का कीटाणु शोधन

संगरोध तथा अलगाव

- नए खरीदे गए पशुओं को पशु शाला में लाने से पहले कुछ समय के लिए अलग जगह जैसे बंदरगाहों , सीमाओं पर तथा गांव में कुछ दूरी पर स्थित पुराने खाली घर या पंचायत के पशुशाला में रखना चाहिए
- कुछ बीमारियों जैसे ट्यूबरक्लोसिस/जोंस डिजीज/ ब्रूसेलोसिस इत्यादि की जांच आवश्यक रूप से करनी चाहिए
- बीमार पशुओं को अलग रखना चाहिए तथा एकांत में ही इलाज करना चाहिए
- बीमार पशुओं का दूध उपयोग नहीं करना चाहिए तथा दूध को हमेशा उबालकर उपयोग करना चाहिए
- बीमार पशुओं से संबंधित चीजों जैसे बिचौनी, चारा और जल को हटाकर कीटाणु शोधन हमेशा करना चाहिए जैसे लाल दवाई से कीटाणु शोधन फॉर्मलीन से कीटाणु शोधन सोडियम पोटेशियम बाइकार्बोनेट से कीटाणु शोधन
- इलाज पूरा करवाएं तथा पशुओं में महामारी के समय पीने के पानी में लाल दवाई डालनी चाहिए

नियंत्रण तथा टीकाकरण

- महामारी के समय पशुओं के निर्धारित स्थान से बाहर पशुशाला से बाहर ले जाने पर संपूर्ण पाबंदी होनी चाहिए
- बीमारियों की रोकथाम के लिए टीकाकरण सबसे बड़ा हथियार है इसलिए पशुओं का एचएस, एफएमडीबी, ब्लैक क्वार्टर, पीपीआर, स्वाइन फीवर इत्यादि के लिए टीकाकरण जरूर करवाएं

स्वच्छता

- गोबर, लार, मूत्र इत्यादि को सही तथा समयानुसार हटाना
- मृत पशु उसकी बिचौनी तथा मल त्याग का सही निपटान तथा किसान कीटाणु शोधन किया जाना चाहिए
- मृत पशु तथा संबंधित मल मूत्र इत्यादि को चार पांच फीट गहरे गड्ढे में डालकर उस पर नमक, चुना, मिट्टी पत्थर और कांटेदार झाड़ियों डालें
- समय-समय पर पशुशाला की सफाई तथा कीटाणु शोधन जरूर करें